डॉ॰ बुद्धदेव प्रसाद सिंह
सहायक प्राचार्य (asst. prof.),
हिन्दी विभाग,
डी.बी. कॉलेज जयनगर

पाठ्य सामग्री,
स्नातक राष्ट्रभाषा हिन्दी, द्वितीय वर्ष।

दिनांक- 12.05.2020
(व्याख्यान संख्या- 23)

* 'गंगावतरण' का कथानक

'गंगावतरण' आचार्य जानकीवल्लभ शास्त्री रचित 'संगीतिका' शैली की पहली रचना है। इस गीतिनाट्य में भगीरथ द्वारा तपस्या के उपरान्त गंगा को स्वर्ग से पृथ्वी पर लाने की कथा का आधार लेकर साधना को जनकल्याण के लिए समर्पित करने पर कलात्मक रूप से बल दिया गया है।

तीन दृश्यों में सज्जित इस गीतिनाट्य के आरंभ में समवेत स्वर में गाया गया एक गीत है, जिसमें यह भाव व्यक्त किया गया है कि यदि संकल्प स्वच्छ हो तथा साधन भी निश्छल एवं निर्मल हो तो अंबर क्या धरती पर भी स्वर्ग उतर सकता है। इस गीत के बाद सूत्रधार के शब्दों में कहलवाया गया है कि यदि पुरुषार्थ प्रबल हो तो असंभव कुछ नहीं है। इसी क्रम में भागीरथ के समान कूटस्थ स्वर में गाया जाता है कि 'असंभव' शब्द ही अर्थ-विहीन है तथा असंभव को संभव करने के भगीरथ प्रयत्न की बात की गयी है, जिससे भगीरथ की भीषण तपस्या का संकेत भी स्पष्ट रूप से मिल जाता है। पुनः सूत्रधार का सहज स्वर गूँजता है, जिसके माध्यम से सूचना दी गयी है कि गोकर्ण नामक पुण्य तीर्थ में निराहार रहकर भगीरथ ने वचन और कर्म से एकनिष्ठ होकर तपस्या की और उनकी इस भीषण तपस्या से देवराज इंद्र का मन भी आशंकित होकर क्षुब्ध हो गया। उनका मन सहज करने के लिए रंभा और उर्वशी के नृत्य तथा गान का आयोजन होता है। इस गीत में रंभा मन प्रसन्न करने हेतु नूपुर की धुन के प्रभाव की बात करती है तो उर्वशी पृथ्वीवासियों पर टिप्पणी करती है कि जहाँ बारहों महीने कोयल के स्वर गूँजते हैं, उसी मृत्यु लोक के वासी तन के रूखे, मन के सूखे और भूखे क्यों होते हैं! उर्वशी भोगवाद का समर्थन करती है तथा मनुष्य के दुःखी होने का कारण उनकी साधना और तपस्या को ही मानती है। इसके बाद सूत्रधार का सहज स्वर पुनः आता है जिसमें वह रंभा-उर्वशी के गीत का इंद्रदेव पर प्रभाव की सूचना देता है। इंद्रदेव यह सोचकर की सुंदरियों की बाँकी चितवन तो साधना के पर्वत को ढहा सकती है, परियों को समझाकर भगीरथ का तप भंग करने के लिए भेजते हैं।

द्वितीय दृश्य में घोर तपस्या में लीन भागीरथ का तप भंग करने हेतु अप्सराओं के प्रयत्न का विवरण है। जरा सी रुकती, झुकती, बलखाती और मृदु स्वर में गाती-नाचती अप्सराओं के प्रबल आकर्षण का दृश्य उपस्थित होने के बावजूद उनके गान निष्प्राण ही रहते हैं और भगीरथ पर उसका कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

तृतीय दृश्य में सूत्रधार यह विवरण देता है कि वर्ष पर वर्ष बीत गये परंतु भगीरथ का सिर नहीं झुका, शरीर शिराओं का वन बन गया, परंतु मन का रथ नहीं रुका। गंगा को लाना ही होगा, स्वर्ग छोड़कर इस धरती पर उन्हें आना ही होगा। यदि इतना तप पर्याप्त नहीं है तो प्राणों की आहुति भी दे दूँगा। भगीरथ के इस संकल्प के कारण ब्रह्मा का कमलासन हिल जाता है और वे भगीरथ को वरदान देने आ जाते हैं ब्रह्मा जी भगीरथ से कहते हैं कि तुम्हारे लिए स्वर्ग भी अदेय नहीं है। यदि तुम चाहो तो तुम्हें मैं स्वर्ग भी प्रदान कर सकता हूँ। भगीरथ अपने पितरों के उद्धार के लिए स्वर्ग प्रदान करने की बात करते हैं। ब्रह्मा जी समझाते हैं कि पितरों का उद्धार देवता कैसे कर सकते हैं ? स्वर्ग तो तुम्हारे लिए प्राप्य हो सकता है। पितरों को तो उनके कर्म के अनुसार ही फल मिलेगा। इस पर भगीरथ का कहना है कि यदि मेरी तपस्या पितरों का उद्धार नहीं कर सकती तो इसे धिक्कार है। भगीरथ यही चाहता है कि पितरों पर उनका आशीष बरसे और पितर तर जाएँ। असमंजस में पड़े ब्रह्मा जी के पास नारद जी का आगमन होता है और नारद जी भी भगीरथ जैसे अद्वितीय तपस्वी नर का मनोरथ पूर्ण करने का ही समर्थन करते हैं, जिस पर प्रसन्न होकर ब्रह्मा जी कहते हैं कि सामान्यतः लोग स्वार्थ-साधक होते हैं, अपने लिए सुख चाहते हैं, परंतु भगीरथ असामान्य महान् व्यक्ति हैं, जिन्होंने लोकमंगल के लिए प्रण ठाना है। इसलिए हम इन्हें अतुलनीय वरदान देंगे जो कि मनुष्यता के उत्थान के प्रतिमान स्वरूप होंगे। भगीरथ धरती पर स्वर्ग को आने देने की मांग करते हैं जिससे कि पितरों की भस्म राशि सुशीतल हो जाए और उन्हें मुक्ति मिल जाये। ब्रह्मा जी अपने कमंडल से गंगा को छोड़कर पृथ्वी पर आने देने की बात स्वीकार करते हैं, परंतु यह चिंता व्यक्त करते हैं कि ऐसा शक्तिशाली इस धरती पर कौन है जो लहरों में गुँथी लहरों वाली उच्छल गंगा को संभाल सके और फिर कुछ सोचकर कहते हैं कि कैलाशनिवासी योगी शिवशंकर यदि चाहें तो यह संभव है, इसलिए उनका वर पाने के लिए भी तपस्या करो। परंतु अचानक डमरू का शब्द सुनाई पड़ता है और भगवान शंकर का स्वर गूंजता है। वे भगीरथ को संबोधित करके कहते हैं शिव का वरदान तुम्हें प्राप्त है। तुम चिंतित मत हो ! भगवान शिव भावना से आर्द्र होकर कहते हैं कि भगीरथ का का तप अद्भुत है। उसने लोकमंगल के लिए तपस्या की है, इसलिए मैं प्रसन्न हूँ। स्वर्गंगा भू पर उतरे और तुम्हारी कीर्ति गगन चढ़कर ऊपर फहरे ! इसी आशीर्वाद के साथ पृष्ठभूमि में शंख, डमरू, मृदंग आदि विविध वाद्यों के साथ गंगा के अवतरण का झर-झर झर-झर शब्द सुनाई देता है और इसी के साथ इस संगीतिका का समापन होता है।